

दिल दुखियों का-ना, दुखा रे सखा
तइयाने में क्या रख्खा सखा, तुझे क्या समझाऊँ
सब लिख्खामर्ज़ के पास-सखारे तुझे क्या समझाऊँ
सखा रे तुझे क्या समझाऊँ

मर्ज़ हरदम करतीं प्यार तुझे मालूम नहीं
तू खोया रहता मस्ती में तालीम नहीं
दुख मिलता है ॥१॥ तत्काल सखा
संग रहता है तेरे काल सखा.
तुझे क्या समझाऊँ-सखा रे तुझे क्या समझाऊँ, sss
सब लिख्खामर्ज़ के -----

तेरी हर हरकत, मालूम है मेरी माता को
धोखा तू देगा, कब तक भाग विधाता को
दर-दर भटकोगे ॥१॥ फिर तो सखा
न जाने कहाँ-अटकोगे सखा
तुझे क्या समझाऊँ-सखा रे तुझे क्या समझाऊँ, sss
सब लिख्खामर्ज़ के -----

कमी नहीं है मर्ज़ के किसी खजाने में
 बस तुझमें कमी इतनी कि मरा मयखाने में
 कई निकल गये हैं ॥१॥ सख़ा
 जायजाद बिकी हर सख़ा
 तुझे क्या समझाऊँ - सख़ा रे तुझे क्या समझाऊँ
 सब लिख़ा मर्ज़ के -----

सिर उठेगा न तेरा जब मर्ज़ पूँदेगी
 शर्म से खुद गड़ जाओगे जब मर्ज़ देखेगी
 फिर पूँदे "श्रीबाबा श्री" तेरा हाल सख़ा
 न लाना दिल में मलाल सख़ा -----
 तुझे क्या समझाऊँ - सख़ा रे तुझे क्या समझाऊँ
 सब लिख़ा मर्ज़ के -----